A-0223

Total Pages : 4 **Roll No. .....**

MASL–505

M.A. SANSKRIT (MASL)

(वेद एवं निरूक्त भाग-02)

2nd Semester Examination, Session December 2024

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :– यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 2×19=38

नोट :– खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

Q. 1. निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी **एक** मन्त्र की सन्दर्भ सहित विस्तृत व्याख्या कीजिए :

(क) कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

(ख) विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते॥

Q. 2. उपनिषद् शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए उसके महत्व एवं प्रतिपाद्य विषय पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए।

Q. 3. यजुर्वेद एवं अथर्ववेद से सम्बन्धित शिक्षा ग्रन्थों का विस्तृत परिचय दीजिए।

अथवा

भारतीय दर्शन परम्परा एवं उसके महत्व पर प्रकाश डालिए।

Q. 4. शिक्षा शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए शिक्षा वेदांग के महत्व एवं प्रतिपाद्य विषय पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए।

अथवा

भारतीय दर्शन में न्याय एवं वैशेषिक के प्रभाव को प्रतिपादित कीजिए।

Q. 5. ईशावास्योपनिषद् के अनुसार व्यक्ति स्वयं को कर्मबन्धन से कैसे बचा सकता है ? विस्तृत वर्णन कीजिए।

अथवा

ईशावास्योपनिषद् के अनुसार, "ईश्वर" की संकल्पना पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

खण्ड–ख

लघु उत्तरीय प्रश्न 4×8=32

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

Q. 1. कठोपनिषद् की विषयवस्तु संक्षेप में लिखिए।

अथवा

कठोपनिषद् में वर्णित आत्मा और परमात्मा का वर्णन कीजिए।

Q. 2. प्राचीन भारत के शिक्षा के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

अथवा

प्राचीन भारतीय शिक्षाप्रणाली का समालोचनात्मक विवेचना कीजिए।

Q. 3. वेदांगों के अन्तर्गत ज्योतिष शास्त्र के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

अथवा

वेदांगों के अन्तर्गत छन्द:शास्त्र के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

Q. 4. पाणिनीय शिक्षा के अनुसार स्वरभेद, कालभेद एवं वर्णों के उच्चारण स्थानों का विशद विवेचन कीजिए।

Q. 5. ऋग्वेदीय शिक्षाग्रन्थों के प्रतिपाद्य विषय पर प्रकाश डालिए।

अथवा

बृहदारण्यकोपनिषद् के आधार पर श्रवण मनन एवं निदिध्यासन के स्वरूप का विवेचन कीजिए।

Q. 6. मुण्डकोपनिषद् के आधार पर परा एवं अपरा विद्या का स्वरूप प्रतिपादित कीजिए।

अथवा

मुण्डकोपनिषद् के आधार पर ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

Q. 7. महर्षि पाणिनि का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए।

Q. 8. निम्नलिखित श्लोक का हिन्दी अर्थ लिखिए :

गीति शीघ्री शिर: कम्पी तथा लिखितपाठक:।

अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमा:॥

अथवा

दैद्वतवाद और अद्वैतवाद को स्पष्ट कीजिए।

****